ऋषि तर्पण ग्रन्थमाला
२

ऋषि दयानन्द के प्राणहरण व अपमान की चेष्टाएँ

लक्ष्मीचन्द वानप्रस्थी

इस पुस्तक के प्रकाशन में निम्न साहित्यप्रेमियों ने सहयोग दिया है—	
५००/-	**डॉ० श्री रवीन्द्रजी अग्निहोत्री** १३८, एम०आई०जी०, पल्लवपुरम्, फेज-२, मोदीपुरम्, मेरठ (उ०प्र०)
५००/-	**श्री विजयमुनिजी वानप्रस्थी** बहलोलपुर, एत्मादपुर, मेरठ (उ०प्र०)
५००/-	**डॉ० श्री राजेन्द्रजी माथुर** ६ ए, हाईकोर्ट कॉलोनी, सेनापति भवन के पास, जोधपुर (राज०)
५००/-	**श्री अशोकजी माणिकटाला** के-१५२, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तरांचल)
५००/-	**श्री प्रभातकृष्णजी अरोड़ा** ताज ट्रेडमार्क एजेन्सी, ११०, आनन्द वृन्दावन, संजय प्लेस, आगरा (उ०प्र०)

वैदिक पुस्तकालय

प्रकाशक : **श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट**
ब्यानिया पाड़ा, हिण्डौन सिटी (राज०)-३२२ २३०
दूरभाष : ०७४६९-२३४६२४; चलभाष : ०-९४१४०३४०७२

संस्करण : प्रथम (५००० प्रतियाँ)
(ऋषि दयानन्द स्मृति दिवस, दीपावली-२००४)

मूल्य : स्वयं पढ़ें एवं अन्यों को पढ़ाएँ

प्राप्ति स्थान : १. **टङ्कारा साहित्य सदन**
आर्यसमाज, हिण्डौन सिटी (राज०) ☎ ०७४६९-२३४९००
२. **श्रेष्ठ साहित्य सदन**, सैंती, चित्तौड़गढ़ (राज०)
शाखा-पहुँना, चित्तौड़गढ़ (राज०) ☎ ०१४७१-२२२०६४
३. **श्री हरिकिशन ओमप्रकाश**
३९९, गली मंदिरवाली, नया बाँस दिल्ली-६, ☎ २३९५८८६४

शब्द संयोजन : **भगवती लेज़र प्रिंट्स**, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-६५

मुद्रक : **राधा प्रेस**, कैलाशनगर, दिल्ली-११० ०३१

प्रकाशकीय

साहित्य ही संस्था का भविष्य निश्चित करता है

७ सितम्बर, २००४ योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्मदिवस का दिन आर्यसमाज, हिण्डौन सिटी के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया। अनिश्चितता, संशयभरे मनों के अन्तर्गत आशा और उमङ्ग का सञ्चार होते देख हमें अपना विश्वास पुष्ट होता हुआ दिखा कि वैदिक सिद्धान्तों की पोषक तथा संवाहक संस्था आर्यसमाज समाप्त नहीं हो सकेगी। जो सत्य व शाश्वत है वह नष्ट कैसे हो सकता है? सोने पर समय की जङ्ग लगने का अर्थ क्या सोने का अस्तित्व समाप्त होना है? स्वर्ण के अस्तित्व समाप्ति की घोषणा का अर्थ या तो दृष्टि का धुँधलापन है अथवा पात्र जनों को धोखा देकर स्वर्ण हथियाने का षड्यन्त्रमात्र है। हमें स्वाध्याय द्वारा अपनी दृष्टि का धुँधलापन साफ करना है तथा समय-समय पर राजनीति से दूर संस्था हित में निष्ठायुक्त जनों के लिए ठोस कार्यक्रमों का आयोजन करना है।

हिण्डौन सिटी जैसे छोटे से नगर में तीन सौ निष्ठावान् आर्यजनों का एकत्रीकरण इस बात का स्पष्ट सङ्केत है कि आर्यों में ज्ञानार्जन की भूख तथा देव दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा है। हमें अपनी दशा और दिशा देव दयानन्द के वेदोक्त मार्ग से ही संपृक्त रखनी है। मुझे जितने ही आर्यजनों से वार्ता का सुयोग मिला, सभी ने उत्साहित किया। जबसे पूज्य पितृदेव स्मृतिशेष श्री प्रहलादकुमारजी आर्य की निष्ठा तथा कार्यप्रणाली ने अन्तर में वास किया है। मात्र पुस्तकें ही दृष्टिगत होती हैं। एक ऐसे मालामाल समाज का साकार स्वप्न मन में समा गया है जहाँ व्यस्त जीवन के अन्तर्गत भी समय निकालकर आर्यजन स्वाध्याय कर रहे हैं। चिन्तन कर अपने जीवन में धारण कर समाज का भी भला कर रहे हैं। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बिका साहित्य सुखद भविष्य का सङ्केत है कि दिशा सही है तो दशा भी सही होगी ही। जहाँ यह कहा जाता हो कि किसे समय है पुस्तकें पढ़ने का वहाँ यह व्यवहार हमारी आशा को जीवन्त बनाये रखता है कि आर्यों में अभी ललक, उत्कण्ठा व जिज्ञासा जीवित है।

किसी समाज व व्यक्ति का भविष्य उसकी अपने सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा तथा निष्ठानुरूप कर्म से सुनिश्चित होता है। आर्यसमाज जो श्रेष्ठजनों का समाज है इसकी श्रेष्ठता निरन्तर किये गये श्रेष्ठ कार्यों पर निर्भर करती है और यह श्रेष्ठ कार्य करने की प्रेरणा हमें वेदोक्त विचारधारा के अविकल स्वाध्याय से ही प्राप्त हो सकती है। वेदोक्त विचार ही सर्वजनहिताय हैं और यही व्यक्ति की ही नहीं, बल्कि समष्टि की उन्नति-प्रगति की कामना करते हैं। जिसका स्वाध्याय शिथिल हुआ उसके विचार शिथिल होंगे और बिना विचारों के कर्म कैसा होगा यह विचार पाठक स्वयं कर सकते हैं। हमने अपनी यात्रा का शुभारम्भ इसी स्वाध्याय पथ से किया है और यही हमारा मुख्य लक्ष्य है। आप सभी के यत्न व सहयोग से हम इस दिशा में अग्रसर हैं।

अब तक हमने छह सहस्र के लगभग पृष्ठों की पठनीय सामग्री उपलब्ध करवाई है। आर्थिक दृष्टि से हमारा यत्न यही रहा कि यह सभी की पहुँच सीमा में हो। इसका विश्लेषण आप ही अधिक सटीक कर सकेंगे। हमारे जितने साधन हैं उसकी सीमा छू चुकी है। कार्यारम्भ करते समय हमने जो गणित लगाया वह पूरा हो

चुका है। जितनी संख्या में पुस्तकें हम इस प्रकार दे सकते थे अब उससे आगे बढ़ने का अर्थ सञ्चित साधनों में कटौती करना होगा और कटौती का अर्थ जितना कर पा रहे हैं उतना भी नहीं कर पाना होगा। हमने संकोच के साथ ही आपसे अर्थ की कामना की है, लेकिन अब हमारी सीमा व संकोच समाप्ति का अवसर आ गया है और हम यह बतलाना चाहते हैं कि आपको इस स्वाध्याय रथ को आगे बढ़ाना है तो आर्थिक सहयोग करना ही होगा, अन्यथा जितना हम कर रहे हैं इससे आगे बढ़ना सम्भव नहीं होगा। आर्यसमाज को जीवित व गतिशील बनाये रखने के लिए हम आपके समक्ष कुछ अंशदान की अपेक्षा के साथ उपस्थित हैं कि अपनी आय का कुछ भाग मानवता की रक्षार्थ हमें भेंट करें। इसके कुछ प्रकार इस प्रकार हो सकते हैं—

१. किसी पुस्तक के लिए सहायतार्थ राशि प्रदान करें, जिससे वह कम मूल्य पर अधिकतम जनों तक पहुँचाई जा सके।
२. किसी पुस्तक के प्रकाशन का सम्पूर्ण या आधा व्यय वहन करें और बिक्री के उपरान्त मूल राशि जो आपने प्रदान की हो, लौटाई जा सके।
३. प्रतिवर्ष पाँच सौ रुपये की राशि प्रकाशन कार्य हेतु भिजवाएँ, जिससे पुस्तकें सस्ती विक्रय की जा सकें अथवा निःशुल्क वितरित की जा सकें।
४. प्रतिदिन प्रति व्यक्ति एक रुपया से मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक या वार्षिक भिजवाएँ।
५. अपने परिवारों में आये स्मरणीय दिवसों पर सहयोग राशि भिजवाएँ।
६. अपने किसी प्रिय की स्मृति में किसी पुस्तक के हमेशा प्रकाशन के लिए राशि प्रदान करें, जिससे स्वाध्यायी जनों को पाठ्यसामग्री के साथ आपके प्रिय की स्मृति बनी रहे।
७. अपने या अपने परिजनों को उत्साहित व प्रेरित करने के लिए राशि प्रदान करें।
८. अपने नाम से लघु पुस्तिकाएँ वितरण हेतु प्रकाशित करने के लिए सहयोग करें।
९. पुस्तकालयों व वाचनालयों में निःशुल्क पुस्तकें भिजवाने हेतु धन भिजवाएँ।
१०. किसी व्यक्ति विशेष को उपहारस्वरूप पुस्तकें भिजवाने के लिए राशि भिजवाएँ।

हम यथासम्भव सहयोगियों के नाम, पता, चित्र, परिचय आदि पुस्तक में प्रकाशित करेंगे।

इनके अतिरिक्त और भी प्रकार हो सकते हैं। सभी का उद्देश्य अधिकतम जनों तक स्वाध्याय सामग्री पहुँचाना है। इतिहास व वर्तमान साक्षी है, वही आगे बढ़े हैं जिनका साहित्य अधिकतम जनों तक पहुँचा है। हम श्रेष्ठ कहाये जानेवाले आर्य इस श्रेष्ठ कर्म में सबसे आगे होने चाहिएँ। बड़ी आशा, अपेक्षा व आकांक्षा सहित आपके सहयोग की प्रतीक्षा रहेगी।

—प्रभाकरदेव आर्य

ओ३म्

ऋषि दयानन्द के प्राणहरण व अपमान की चेष्टाएँ

आर्यसमाज के भजनोपदेश व कुछ प्रचारक, उपदेशक प्रायः यह कहते हुये सुने जाते हैं कि महर्षि दयानन्द को सोलह बार (कोई-कोई सतरह बार भी कहते हैं) विष दिया गया।

स्वामी दयानन्द के प्रमाणिक जीवन चरित्रों में प्रमुख हैं—

१. पं० लेखराम कृत "महर्षि दयानन्द का जीवन चरित" जो आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, ४५५ खारी बावली, दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित जिसके मूल लेखक बाबू श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय व अनुवादक पं० श्री घासीराम एम०ए०एल० एल०बी० एडवोकेट मेरठ हैं। यह गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क दिल्ली-६ द्वारा प्रकाशित है।

३. नव जागरण के पुरोधा-दयानन्द सरस्वती, लेखक डॉ० भवानीलाल भारतीय। इसका प्रकाशन वैदिक पुस्तकालय, परोपकारिणी सभा दयानन्द आश्रम, अजमेर है।

उपरोक्त पुस्तकों के आधार पर इस विषय की सही-सही वस्तुस्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

यह बात सर्वविदित है कि महर्षि दयानन्द सत्य के बड़े प्रबल उपासक एवं पोषक थे। जीवन भर उन्होंने बड़े-से-बड़े प्रलोभन को ठुकराकर सदैव सत्याचरण किया, सत्य का पालन किया। वे चाहते थे कि उनके विषय में कभी भी असत्य का प्रतिपादन न किया जाये। उन्हें अपनी प्रशंसा अभिप्सित भी नहीं थी। स्वामीजी के पत्र एवं विज्ञापन—सं० पं० भगवद्दत्त बी०ए० प्रकाशक रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत, हरियाणा) है। यह पत्र-व्यवहार चार भागों में प्रकाशित हुआ है। इसके द्वितीय भाग के पृष्ठ सं० ६९५ पर एक पत्र (पूर्ण सं० ६६८) पण्डित गोपालराव हरि फर्रुखाबाद वालों के नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित है। यह पत्र अविकल रूप से उद्धृत है।

पण्डित गोपालराव हरिजी! आनन्दित रहो।

आज एक साधु का पत्र मेरे पास आया। वह आपके पास भेजता हूँ। साधु का लेख सत्य है, परन्तु आपने चित्तौड़ सम्बन्धी इतिहास में न जाने कहाँ से क्या सुन-सुनाकर लिख दिया। उस काल, उस स्थान में मेरा उदयपुराधीश से केवल तीन ही बार सभागम हुआ। आपने प्रतिदिन दो बार होता रहा, लिखा है। आप जानते हैं मुझे ऐसे कामों के परिशोधन का अवकाश नहीं। यद्यपि

आप सत्यप्रिय और शुद्ध भाव-भाषित ही हैं, और इसी हित्त-चित्त से उपकारक काम कर रहे हैं, परन्तु जब आपको मेरा इतिहास ठीक-ठीक विदित नहीं तो उसके लिखने में कभी साहस मत करो। क्योंकि थोड़ा-सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोष कृत्य बिगड़ जाता है। ऐसा निश्चय रक्खो और उस पत्र का उत्तर शीघ्र भेजो। बैशाख शुक्ल २, सम्वत् १९३९, स्थान शाहपुरा।

(दयानन्द सरस्वती)

इस पत्र को पढ़कर प्रत्येक आर्यसमाजी का यह पावन कर्त्तव्य हो जाता है कि वह सदैव सत्य का ही प्रतिपादन करे। महर्षि की झूठी प्रशंसा करके हम उनकी कीर्ति को धवल नहीं करते, असत्य का सहारा लेकर स्वामीजी के विषय में यदि कुछ भी प्रशंसात्मक कहा जाता है तो वह उनके सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। अत: हम सबको विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर मैंने उपरोक्त तीनों जीवन चरितों को पढ़ा और जहाँ भी कोई भी कुचेष्ठा या प्रयास स्वामीजी के प्राणहरण का किया गया—चाहे वह विष द्वारा, चाहे विषधर फेंककर या ईंट-पत्थरों की वर्षा करके, लाठी-डण्डों के प्रहार द्वारा आदि-आदि उन सबको बड़ी सावधानी से छाँटकर यहाँ एकत्रित करने का प्रयास किया है।

एक बात और ध्यान में रखने की है और वह यह कि स्वामी दयानन्द गुरु विरजानन्द के यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके ही समाज में फैली कुरीतियों, अन्धविश्वासों पाखण्डों के विरोध के साथ-साथ अनार्ष ग्रन्थों का भी विरोध करते थे। अत: उनके प्राणहरण की चेष्टाएँ भी इस काल के बाद की ही हैं। स्वामीजी ने गुरु विरजानन्द की कुटिया अप्रैल १८६३ में छोड़ी। देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के द्वारा लिखित स्वामीजी के जीवन चरित के आधार पर स्वामीजी के प्राणहरण की चेष्टाओं का विवरण निम्न प्रकार है—

१. अप्रैल १८६८ में स्वामीजी गडियाघाट (जो एटा जिले में सोरो के पास है) पहुँचे। वहाँ एकदिन एक उजड्ड ठाकुर अपने तीन साथियों के साथ तलवार एवं लाठी लेकर स्वामीजी को आघात पहुँचाने आये थे। कारण यह था कि सोरो चक्राङ्कितों का गढ़ था महाराज उनका विरोध करते थे। उस समय बलदेव भक्त भी वहीं बैठे थे उन्होंने उसे रोका, परन्तु वह न माना और स्वामीजी के बराबर बैठ गया। स्वामीजी ने उसे समझाया पर वह न माना। स्वामीजी वहाँ से उठकर दूसरी मढी में जा बैठे। उस ठाकुर ने अपने आदमियों को संकेत किया कि वे बलदेव को पकड़ लें। जब वे लोग बलदेव गिरी की ओर लपके तो बलदेव (जो उण्डयेल जवान था) ने उनमें से एक का हाथ और एक का पैर पकड़कर वहीं गिरा दिया। इतने में अन्य लोग भी वहाँ आ गये और उन दुष्टों को पीटकर भगा दिया।

२. ज्येष्ठ सं० १९२५ में स्वामीजी कर्णवास पधारे। कर्णवास के पास बरोली नाम का एक ग्राम है वहाँ के एक बडगूजर क्षत्रिय राव कर्णसिंह थे वे वृन्दावन के रङ्गाचारी के शिष्य थे, स्वामीजी द्वारा चक्राङ्कितों का विरोध करने पर कर्णसिंह स्वामीजी से अप्रसन्न हो गया और उसने स्वामीजी को मारने के

लिये तलवार निकाल ली। महाराज ने उससे तलवार छीनकर पृथ्वी पर टेककर तोड़ दी और कहा कि कहे तो यह तलवार तेरे शरीर में घूँस दूँ। ठाकुर किशनसिंह भी वहीं उपस्थित थे और कहा कि अब यदि तूने महाराज के लिए एक शब्द भी कहा तो फौजदारी हो जायेगी। यदि तूने उपदेश नहीं सुनना है तो चला जा। कर्णसिंह घबराया और लज्जित होकर अपने डेरे पर चला गया।

३. यही कर्णसिंह शरद पूर्णिमा पर पुन: गङ्गा-स्नान को आया। पहली बार असफल होने पर इसबार उसने कुछ बैरागियों को उकसा दिया, परन्तु वे घबरा गये। अब उसने अपने सेवकों को तैयार किया। एकदिन रात्रि को कर्णसिंह के तीन सेवक स्वामीजी को मारने के लिए गये। आहट होने से स्वामीजी जाग गये। वे लोग डरकर भाग आये। कर्णसिंह ने फिर दुबारा भेजा इसबार फिर स्वामीजी जाग गये और उनकी हुङ्कार सुनकर घातक स्वामीजी के पैरों में गिर पड़े। इसी बीच कैथलसिंह जो स्वामीजी की सेवा के लिये नियुक्त था, बहुत से ठाकुरों के बुला लाया। ठाकुर किशनसिंह ने कर्णसिंह को ललकारा पर वह सामने नहीं आया। उसके ससुर ने भी कर्णसिंह को कहा कि यदि तुम्हारे दिन अच्छे हैं तो तुरन्त यहाँ से चले जाओ। वह अपने ससुर की बात मानकर वहाँ से चला गया।

४. कर्णवास से स्वामीजी शहबाजपुर गये। वहाँ दो बैरागी एक ठाकुर के पास तलवार माँगने आये कि इस गप्पाष्टक (स्वामीजी) का मूँड काटेंगे। ठाकुर ने उन्हें धमकाया। ठाकुर गङ्गासिंह ने जो कई गाँवों के जमींदार थे, ने भी उन लोगों को धमकाया।

५. फर्रुखाबाद में एक ज्वालाप्रसाद नामक मद्य एवं मांसाहारी ब्राह्मण था। एकदिन एक वाममार्गी उसे पालकी में डालकर स्वामीजी के पास ले गया। वह स्वामीजी के सम्मुख कुर्सी पर बैठकर उन्हें दुर्वचन कहने लगा। उसके व्यवहार से भक्त लोग दु:खी हुये और उसे पीट दिया। स्वामीजी को यह बात अच्छी नहीं लगी। इस घटना का पता लगने पर ज्वालाप्रसाद का सम्बन्धी २०-२५ लठैतों को लेकर स्वामीजी को मारने को आया, परन्तु स्वामीजी के दर्शन करते ही उसका इरादा बदल गया। फर्रुखाबाद के लाला जगन्नाथ ने स्वामीजी को एक सुरक्षित स्थान पर रहने की सलाह दी। **स्वामीजी ने कहा यहाँ तो आप मेरी रक्षा कर लेंगे, परन्तु अन्यत्र कौन करेगा। मैंने आज तक अकेले भ्रमण किया है, आगे भी करूँगा। कई बार मेरे प्राणहरण की चेष्टा की गई, परन्तु सर्वरक्षक परमात्मा ने सर्वत्र मेरी रक्षा की है भविष्य में भी वही करेगा, आप चिन्ता न करें।**

६. फर्रुखाबाद में ही एक परसाद नायी गुजराती ब्राह्मण वहाँ के नामी गुण्डों में एक था। कुछ द्वेषी लोगों ने पैसों के लालच से उसे स्वामीजी को पीटने भेजा। वह मोटा लट्ठ लेकर स्वामीजी के पास गया। स्वामीजी के वार्तालाप से वह बड़ा प्रभावित हुआ और फिर आजीवन एक सदाचारी ब्राह्मण की तरह रहा।

६-ए. एक दिन महाराज विश्रान्त घाट पर जल में पैर लटकाये बैठे थे कि कुछ शरारती लड़कों ने रेत के गोले बनाकर स्वामीजी को मारने शुरु किये, परन्तु वे चुपचाप गोले खाते रहे और लड़कों से कुछ नहीं कहा। अन्त में जब आँख में कुछ रेत पड़ गई तो वहाँ से उठकर अन्यत्र चले गये। (यह प्राणहरण की चेष्टा नहीं थी)।

७. काशी में एक बार महाराज गङ्गा तट पर अर्द्ध निमलित चक्षु होकर बैठे बड़े मधुर कण्ठ से सामगान गा रहे थे। तभी वहाँ मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या एक अध्यापक के साथ पहुँच गये। थोड़ी देर पश्चात् स्वामीजी ने पण्ड्याजी एवं अध्यापक महोदय को वहाँ से चले जाने को कहा कि यहाँ उपद्रव होनेवाला है। वे जाने को ही थे कि कुछ लोग लाठी-ढेले लिये हुये वहाँ आ गये और महाराज पर ढेले फेंकने लगे। एक व्यक्ति ने आगे बढ़कर उनपर लाठी का प्रहार किया। स्वामीजी ने उसकी लाठी पकड़ ली और उसे गङ्गा में धकेल दिया। फिर निकट के एक वृक्ष से एक शाखा तोड़कर प्रहार करनेवाले लोगों से बोले—आओ मित्रो, अब प्रहार करो। मुझे निरा साधु ही न मानना। उन्होंने कई पर प्रहार किया। वे लोग भाग गये। स्वामीजी गङ्गा में तैरने लगे। स्वामीजी कभी-कभी मालकाङ्गनी का तैल खाया करते थे और कहा करते थे कि इसे खाकर जल में बहुत देर तक रहा जा सकता है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि इसे गोले के साथ खाने से स्मरण शक्ति बहुत बढ़ जाती है। ईंट फेंकनेवालों में पं० सूर्यकुमार शर्मा रईस, पुराना कानपुर भी था। वे हलधर के शास्त्रार्थ में स्वामीजी पर ईंट फेंककर आये थे। उनका स्वामीजी के प्रति द्वेष इतना बढ़ा था कि वे उनके (स्वामीजी) नाम से भी जलते थे। उनकी पुस्तकें जहाँ पाते फाड़ देते थे। मार्गशीर्ष सं० १९३९ में उनका छोटा भाई स्वामीजी की कुछ पुस्तकें खरीद लाया। पण्डितजी उन्हें फड़वाना चाहते थे पर उनकी सुन्दरता देखकर उनका मन उन्हें पढ़ने को ललचा गया। मेला चाँदापुर का वृत्तान्त पढ़कर उनकी बुद्धि से अज्ञान का पर्दा उठ गया और वे स्वामीजी की युक्तियों से अत्यन्त प्रभावित हुये। सं० १९४० में आर्यसमाज की स्थापना जब उनके नगर में हुई तो वे उसके सभासद बने और अन्त तक स्वामीजी के प्रति श्रद्धालु बने रहे।

८. कार्त्तिक शुल्क १२ सं० १९२६ तदनुसार १६ नवम्बर १८६९ को काशी का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ। विपक्षी पण्डितों ने काशी नरेश की शह पाकर हल्ला-गुल्ला मचा दिया और "दयानन्दः पराजितः" कहते हुए काशी नरेश भी सभा से उठ गये। फिर क्या था, सारी सभा अनियन्त्रित हो गयी और स्वामीजी पर ढेले, गोबर, मिट्टी आदि की वर्षा कर दी। सारा आर्यजगत् काशी के तत्कालीन कोतवाल पं० रघुनाथप्रसाद का आभारी है जिन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालनकर स्वामीजी की रक्षा की। यद्यपि वह मूर्त्ति-पूजक था, परन्तु था कर्त्तव्यपरायण, न्यायप्रिय। जब स्वामीजी पर गुण्डे ढेले, गोबर, ईंट आदि फेंक रहे थे, तब स्वामीजी ने पं० जवाहरदास उदासी को कहा कि आप निश्चिन्त रहें। ईश्वर मेरे साथ है मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता।

९. महाराज वेद विरुद्ध सभी मतों का खण्डन करते थे। उनमें इस्लाम भी था। मुसलमान उनसे चिढ़ गये। एकदिन महाराज अकेले गङ्गा तट पर बैठे थे कि कुछ मुसलमानों की टोली टहलते-टहलते स्वामीजी के निकट पहुँच गई। उनमें से एक ने स्वामीजी को पहचान लिया और कहा कि यही वह बाबा है जो दीन इस्लाम के खिलाफ बोला करता है। इसपर दो व्यक्ति आगे आये और महाराज को अगल-बगल से उठाकर गङ्गा में फेंकने की चेष्टा करने लगे। महाराज उनके दुष्ट सङ्कल्प को जान गये। उन्होंने अपनी दोनों भुजाएँ इसप्रकार चिपका लीं कि दोनों युवकों के हाथ मानो शिकञ्जे में कस गये। उन दोनों को बगल में दबाये हुये ही स्वामीजी गङ्गा में कूद गये। वे चाहते तो दोनों को जलमग्न कर देते पर दया करके उन्हें छोड़ दिया और स्वयं जल में नीचे-नीचे तैरते बहुत दूर निकल गये। वे दोनों किसी प्रकार जल से बाहर आये और हाथों में ईंट लेकर स्वामीजी के जल से बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगे। बहुत देर तक स्वामीजी नहीं आये तो उन्होंने समझा कि बाबा जल में डूब गया और चले गये। स्वामीजी महाराज रात्रि होने पर अपने स्थान पर आ गये।

१०. काशी में ही एकदिन एक मनुष्य भोजन लेकर स्वामीजी के पास आया और भक्तिभाव का प्रदर्शन करके स्वामीजी से भोजन पाने की प्रार्थना की। स्वामीजी ने कहा कि मैं तो भोजन कर चुका आप करिये। वह व्यक्ति बोला अच्छा तो पान ही खालो। महाराज ने पान लिया खोलकर देखा तो व्यक्ति झटपट भाग गया। पीछे ज्ञात हुआ कि पान में विष था। इस घटना का वर्णन स्वामीजी ने अप्रैल १८७८ में मुलतान में एक बङ्गाली सज्जन बाबू शरच्चन्द्र चौधरी से भी किया था। स्वामीजी का शरीर बड़ा बलिष्ठ था वे १०-१५ गुण्डों के लिये अकेले ही पर्याप्त थे। एकदिन एक गुण्डा स्वामीजी के पीछे चला आ रहा था उसके इरादे अच्छे नहीं थे। स्वामीजी ने पीछे लौटकर हुङ्कार लगाई तो वह भयभीत होकर भाग गया।

११. मिर्जापुर में बूढ़े महादेव का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। उसका पुजारी छोटू गिरि बड़ा हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था। मूर्त्ति-पूजा के कारण वह स्वामीजी से द्वेष मानता था। एकदिन वह दुष्ट स्वामीजी के पास आया और उनसे बोला—बच्चा अभी तू कुछ पढ़ा नहीं है कुछ पढ़। वह स्वामीजी से दुष्टता करने लगा और बोला बच्चा हम तेरे गुरु हैं आज तुझे सब पता लग जायेगा। इसपर स्वामीजी खड़े हो गये और सिरहाने का पत्थर उठाकर बोले मूर्ख मुझे भय दिखता है यदि मैं ऐसे भयभीत होता तो देश-देश घूमकर कैसे खण्डन करता। इसके बाद जिला मजिस्ट्रेट ने स्वयं ही अथवा किसी सज्जन के अनुरोध पर स्वामीजी की रक्षा के निमित्त एक व्यक्ति को स्वामीजी के निवास स्थान पर पहरा देने के लिये नियत कर दिया।

१२. मिर्जापुर में एक ओझा ठहरा हुआ था। उसने डींग मारी कि यदि कोई मुझसे मारण का पुरश्चरण कराये तो इक्कीसवें दिन दयानन्द की मृत्यु हो जायेगी। मूर्त्ति-पूजकों में मूर्खों की कमी नहीं थी। उनमें से एक धनी सेठ बोला चाहे जितना पैसा लो और पुरश्चरण करो। अभी तीन चार दिन ही हुये

थे कि दैवयोग से सेठजी के गले में फोड़ा निकल आया। उसने ऐसा भयङ्कर रूप धारण कर लिया कि सेठजी का खाना-पीना, बोलना-चालना दूभर हो गया। सेठजी की पीड़ा बढ़ रही थी, ओझाजी की कढ़ाई चढ़ रही थी। एक दिन ओझा सेठजी से बोला कि बलि की सामग्री प्रस्तुत कराओ इधर मैं बलि दूँगा उधर दयानन्द की गर्दन गिर जायेगी। सेठजी बोले दयानन्द की गर्दन गिरे या नहीं मेरी जरूर गिर जायेगी तुम पुरश्चरण बन्द करो।

१३. छोटू गिरि स्वामीजी से अपमानित होकर लौटा था उसके मन में द्वेष की ज्वाला जल रही थी। एकदिन उसने दो गुण्डे पुनः स्वामीजी के पास भेजे। स्वामीजी किन्हीं सज्जन से वार्तालाप कर रहे थे। गुण्डे बीच-बीच में व्यंग करते रहे व व्यवधान डालते रहे। स्वामीजी ने उन्हें डपटा। वे इतने भयभीत हुये कि उनका मल-मूत्र निकल गया और वे बेहोश हो गये। जल का छींटा देकर उन्हें होश में लाया गया।

१४. जब स्वामीजी अनूपशहर में थे तब एक ब्राह्मण ने स्वामीजी के मूर्त्ति-पूजा के खण्डन से रुष्ट होकर उन्हें पान में विष दे दिया। स्वामीजी को पता लगने से न्योली क्रिया द्वारा उसे अपने शरीर से बाहर निकाल दिया एवं स्वस्थ हो गये।

वहाँ के मुसलमान तहसीलदार सैयद मुहम्मद को जो स्वामीजी का भक्त था इस घटना का पता चला तो उस ब्राह्मण को पकड़कर कैद में डाल दिया। स्वामीजी को जब इस घटना का पता चला तो बोले कि उस ब्राह्मण को छोड़ दो मैं संसार को कैद कराने नहीं, अपितु कैद से छुड़ाने आया हूँ। क्या ऐसा अनुपम एवं अनुकरणीय उदाहरण आपने अपने जीवन में कहीं दूसरा देखा है ?

१५. एकदिन स्वामीजी ने अपने पूर्व परिचित भक्त बाबू रजनीकान्त से कहा कि एकदिन जब हम ध्यानावस्थित थे तो एक विपक्षी तलवार लेकर हमारा वध करने आया था परन्तु जब हमने हुङ्कार किया तो वह उठकर भाग गया।

कानपुर में जब स्वामीजी २० अक्तूबर १८७३ को आये तो वहाँ का शहर कोतवाल सुलतान अहमद स्वामीजी के व्याख्यान में बाधक बना। वह नहीं चाहता था कि स्वामीजी के व्याख्यान हों। उसके बढ़ावा देने पर मौलवी अण्ड-बण्ड बकने लगे। पण्डितों ने ईंट-पत्थर फेंककर स्वामीजी के प्राणहरण की चेष्टा की। इसमें कोतवाल का पूरा हाथ था, परन्तु तभी अंग्रेज पुलिस कप्तान वहाँ आ गये और आदेश दिया कि स्वामीजी के व्याख्यान यथापूर्व चलेंगे। हम स्वयं उपस्थित रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि कोतवाल के कुकृत्य के विषय में पुलिस कप्तान को कुछ सन्देह हो गया।

१७. अलीगढ़ में एक भङ्गेड़ी साधु महाराज को गाली देने लगा। स्वामीजी ने पूछा कि गले में क्या पहने हो। उसने कहा रुद्राक्ष है। स्वामीजी ने पूछा कि क्या तुम रुद्र की आँख निकाल लाये हो। वह निरक्षर भट्टाचार्य क्या समझता कि रुद्राक्ष का क्या अर्थ है क्रोध में भरकर महाराज को गालियाँ देता रहा। कुछ देर बकझक कर चला गया।

१८. वृन्दावन में एक मुंशी हरगोविन्द कट्टर हिन्दू था वह उद्धत एवं झगड़ालू प्रवृत्ति का था। एकबार वह गोरे फौजियों से भी लड़ पड़ा था। उसने स्वामीजी के उपर खूब धूल डाली। स्वामीजी की सहनशीलता देखिये उन्होंने उसे कुछ नहीं कहा।

१९. वृन्दावन में ही एक वैरागी ने स्वामीजी के प्राणहरण के लिये कुछ गुण्डों को १०००/- का लालच देकर यह कुकर्म करवाना चाहा, परन्तु सफल नहीं हुआ।

२०. मथुरा में पं० देवीप्रसाद डिप्टी कलेक्टर ने स्वामीजी से कहा कि आप आज ठहर जाईये आज शास्त्रार्थ होगा। स्वामीजी ठहर गये। शास्त्रार्थ तो नहीं हुआ हाँ, चार-पाँच सौ चौबे लाठियाँ लेकर स्वामीजी को मारने आये। हल्ला सुनकर ठाकुर भूयालसिंह रिसालदार घबरा गये उन्होंने उस बाग़ का फाटक बन्द कर दिया जहाँ स्वामीजी ठहरे थे, परन्तु स्वामीजी तनिक भी नहीं घबराये। स्वामीजी के कुछ अनुयायी क्षत्रियगण भी संयोग से तभी आ गये। किसी भी चौबे का भीतर घुसने का साहस नहीं हुआ। पण्डित देवीप्रसाद के आने पर तो सभी भाग गये।

२१. स्वामीजी के मुम्बई प्रवास (दिसम्बर १८७४) के दौरान बल्लभ सम्प्रदाय के लोग स्वामीजी के परम-शत्रु हो गये थे। एकदिन गोस्वामीजी ने स्वामीजी के पाक बलदेव को बुलाकर कहा कि तुम स्वामीजी की हत्या कर दो तो हम तुम्हें १०००/- रुपये देंगे। उसे तुरन्त पाँच रुपये और पाँच सेर मिठाई दे दी और १०००/- रुपये का रुक्का लिख दिया। अभी बलदेव जीवनी गुसाई के पास ही खड़ा था। किसी ने स्वामीजी को सूचना दी कि आपका पाचक जीवनी के पास खड़ा है। जब वह लौटकर आया तो स्वामीजी ने सारा वृत्तान्त पूछा। पाचक ने सब बातें सत्य-सत्य बता दी। स्वामीजी ने कहा कि मुझे कई बार विष दिया है मैं मरा नहीं अब भी नहीं मरूँगा। बलदेव ने क्षमा माँग ली। स्वामीजी ने मिठाई फिंकवा दी, चिट्ठी फड़वा दी और उसे भविष्य में उनके यहाँ न जाने की हिदायत दी।

२२. इसी प्रसङ्ग में एकदिन गोकुलिये गुसाईयों ने अपने अनुयायी कच्छी बनियों की बीस मनुष्यों की टोली स्वामीजी को पीटने के उद्देश्य से बालकेश्वर भेजी, परन्तु वे सफल नहीं हो सके।

२३. कुछ दुष्टों ने स्वामीजी के वध के लिये घातकों को तय किया। वे बालकेश्वर में मौके की तलाश में रहते थे। स्वामीजी बलदेव को साथ लेकर समुद्र तट पर टहलने जाया करते थे। घातक लोग स्वामीजी का पीछा करते थे। एकदिन स्वामीजी की उनसे मुठभेड़ हो गई। स्वामीजी ने कहा कहो क्या इरादा है तुम हमें मारना चाहते हो। उत्तर में वे कुछ नहीं बोले और उन्होंने इसके बाद स्वामीजी का पीछा करना छोड़ दिया। स्वामीजी पूर्ववत् उसी सड़क पर टहलने जाते रहे।

२४. बल्लभ सम्प्रदायवालों ने एकबार पुनः स्वामीजी के वध का यत्न किया। उन्होंने दो गुण्डों को दो सौ रुपये दिये। एकदिन वे दोनों रात्रि के समय स्वामीजी के कमरे में घुस गये। उस समय सेठ सेवकलाल स्वामीजी के पास

बैठे थे। उन्होंने घातकों को पकड़ लिया। पूछने पर उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें स्वामीजी के वध के लिये दो सौ रु० दिये गये थे।

२५. स्वामीजी के सूरत प्रवास में पण्डित इच्छाशङ्कर और कुछ अन्य शास्त्री स्वामीजी से शास्त्रार्थ करने के अभिप्राय से आगे आये, परन्तु स्वामी ने उन्हें निरुत्तर कर दिया। इतने में अन्धेरा होने लगा। सभा में दो-चार ईंटें आकर गिरीं। यह सब गेलाभाई एवं कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने स्वामीजी को अपमानित करने का सङ्कल्प किया था और उनकी योजना से ही ईंटें फेंकीं गईं थीं।

२६. मुरादाबाद में नवम्बर १८७६ ई० में स्वामीजी का मूर्त्ति-पूजा खण्डन पर व्याख्यान सुनकर एक टीका नामक ब्राह्मण इतना आवेश में आया कि स्वामीजी को गाली देने लगा और यह कहता हुआ कि यह दुष्ट हमारे देवताओं की निन्दा करता है, इसका मुख भी नहीं देखना चाहिए, चला गया। स्वामीजी ने उसकी गालियों पर कोई भी ध्यान नहीं दिया।

२७. मार्च १८७७ ई० में चाँदापुर में स्वामीजी ने बख्शीराम व मुंशी इन्द्रमणि को एक आपबीती व्यथा सुनाई थी। जब स्वामीजी एकाकी घूमते थे तो एकबार वे ऐसे स्थान पर पहुँच गये जहाँ सब शाक्त बसते थे। उन्होंने स्वामीजी की बड़ी सेवा-सुश्रूषा की। कई दिन के बाद जब स्वामीजी चलने को हुये तो उन्हें आग्रहपूर्वक ठहरा लिया गया। स्वामीजी ने समझा ये ऐसा भक्तिभाव से कर रहे हैं।

एकदिन उनका पर्व आया। उसदिन सब लोग मन्दिर में गये। स्वामीजी को भी साथ ले गये। स्वामीजी की बहुत अनुनय-विनय की कि आप हमारे मन्दिर में चलो चाहे मूर्त्ति को नमस्कार मत करना। वह मन्दिर नगर से बाहर उजाड़ स्थान पर था। स्वामीजी जब मन्दिर में गये तो वहाँ एक बलिष्ठ व्यक्ति को नङ्गी तलवार हाथ में लिये खड़ा देखा। मन्दिर का पुजारी स्वामीजी से बोला कि महात्माजी दुर्गा माता के सामने शीश झुकाकर नमस्कार करो। स्वामीजी के मना करने पर पुजारी बलपूर्वक स्वामीजी की गर्दन को झुकाने लगा। स्वामीजी उसके इस बर्ताव से चौंके और समझ गये कि दाल में कुछ काला है। उन्होंने झपटकर उस व्यक्ति से तलवार छीन ली पुजारी को धक्का दिया तो वह मन्दिर की दीवार से जा लगा। स्वामीजी जब बाहर आये तो देखा कि मन्दिर के आङ्गन में लोग छुरी-कुल्हाड़ी आदि शस्त्र लेकर स्वामीजी पर टूट पड़े। द्वार पर ताला लगा हुआ था। स्वामीजी उछल कर दीवार पर चढ़ गये और कूद कर भाग निकले। दिनभर किसी सुरक्षित स्थान पर छिपे रहे। रात होने पर बचते-बचते किसी ग्राम में पहुँचे। उस दिन से स्वामीजी ने शाक्त लोगों पर कभी विश्वास नहीं किया।

२८. काशी प्रवास के दौरान स्वामीजी एक पर्णकुटी में निवास करते थे। समीप ही कुछ साधुओं का भी डेरा था। वे साधु स्वामीजी से अकारण ही वैर रखते थे। एकदिन रात्रि के घोर अन्धकार में वे लोग स्वामीजी की पर्णकुटी के पास आये और स्वामीजी का वध करने का परामर्श करने लगे। स्वामीजी ने उनकी बातें सुनली। थोड़ी देर बाद उन लोगों ने कुटिया में आग लगा दी। जब

वह जलने लगी तो स्वामीजी छप्पर उठाकर बाहर निकल आये।

२९. **पान में विष**—एकदिन स्वामीजी महाराज काशी में व्याख्यान दे रहे थे कि एक ब्राह्मण ने उन्हें पान लाकर दिया। उन्होंने सरल स्वभाव से लेकर खा लिया। खाते ही उन्हें ज्ञात हो गया कि पान में विष था। तब उन्होंने वमन द्वारा विष को शरीर से बाहर निकाला दयानन्द प्रकाश के अनुसार उपरोक्त दोनों घटनाएँ स्वामीजी ने लाहौर में डॉक्टर रहीम खाँ की कोठी में लोगों को सुनाई थीं।

३०. १३ जनवरी १८७८ ई० को स्वामीजी पञ्जाब राज्य के गुजराल शहर में पहुँचे। यहाँ एक नामी बदमाश जिसे लोग "अन्धी का पुत्तर" (अन्धी का पुत्र) कहते थे स्वामीजी को बहुत अपशब्द कहता था। वह खुल्लम-खुल्ला कहता था कि मैं या तो दयानन्द को मार डालूँगा या उसकी नाक काट लूँगा। वह स्वामीजी पर बड़े अनर्गल आरोप लगाता था। पुलिस ने भी उसे डाँटा नहीं। मेहता ज्ञानचन्द और उनके साथियों को भय हुआ कि कहीं वह दुष्ट स्वामीजी का कुछ अनिष्ट न कर दे। अत: उन्होंने स्वामीजी को सावधान किया। स्वामीजी ने कहा कि तुम मेरा सोटा देखते हो मुझपर कोई आक्रमण नहीं कर सकता। मैं अकेला दस-बारह व्यक्तियों पर भारी हूँ। एकदिन स्वामीजी महाराज व्याख्यान दे रहे थे। व्याख्यान के दौरान ही कुछ ईंटें मेज पर आकर गिरीं। स्वामीजी किञ्चित् भी विचलित न हुये और व्याख्यान देते रहे। व्याख्यान की समाप्ति पर अपने स्थान लौट आये।

३१. एकदिन एक मनुष्य ने महाराज को ईंट मारी, परन्तु वह स्वामीजी को लगी नहीं। पुलिसमैन उसको पकड़ लाया। उसने ईंट फेंकने से मना ही की। स्वामीजी ने उसे क्षमा कर दिया। स्वामीजी ने कहा कि हमारे साथ यह कोई नई घटना नहीं है। ऐसे लोगों को क्षमा कर दो और इन्हें सदुपदेश दो।

३२. फरवरी १८७८ ई० में स्वामीजी महाराज वजीराबाद में प्रवचन कर रहे थे। वहाँ पण्डित बासदेव ने एक मन्त्र बोला जिसमें शालिग्राम व तुलसी की पूजा सिद्ध होती है। स्वामीजी ने कहा यह वेद का मन्त्र नहीं है, यह किसी मन्त्र की टीका है। स्वामीजी ने मूल मन्त्र प्रस्तुत करने को कहा। वहाँ भीड़ बढ़ गई और उपद्रव की आशङ्का बढ़ गई। वहाँ पण्डित रामचन्द्र आनरेरी मजिस्ट्रेट भी उपस्थित थे। तब तक तो शान्ति रही। पर उनके किसी काम से चले जाने के बाद एक लड़के ने कुछ शोर करना शुरू कर दिया। स्वामीजी ने कहा कि इस लड़के को चुप कराओ। इसपर लाला लब्धाराम साहनी अप्रेन्टिस इञ्जीनियर ने उस लड़के को एक-दो छड़ी मार दीं। पौराणिक खीजे तो बैठे ही थे उन्हें मौका मिल गया उन्होंने लाला लब्धाराम पर आक्रमण कर दिया। आर्यसमाज वजीराबाद तथा आर्यसमाज जेहलम के सभासदों ने जो वहाँ उपस्थित थे उनकी रक्षा की। स्वामीजी व लालाजी को उनके निवास स्थान पर पहुँचा दिया और वहाँ द्वार बन्द कर दिये, परन्तु भीड़ हटी नहीं और शोर मचाती रही। स्वामीजी के हिन्दुस्तानी क्लर्क को आवेश आया तो वह लाठी लेकर भीड़ में चला गया। पर सैकड़ों मनुष्यों के बीच में अकेले मनुष्य की पार ही क्या पड़ती। लोगों ने उसे खूब पीटा।

स्वामीजी को जब यह पता चला तो स्वयं एक लाठी लेकर बाहर आये और जोर से गर्जना करके लोगों को भगा दिया फिर स्वामीजी वहाँ से ७ फरवरी को गुजरानवाला चले गये।

३३. १८ जून १८७८ ई० को अमृतसर में शास्त्रार्थ के आयोजन के दौरान अचानक चिल्लपौ मचने लगी। सभास्थल पर ईंट रोड़ों को फेंका जाने लगा। एक रोड़ा स्वामीजी महाराज को भी मारा गया, परन्तु वे किसी प्रकार बच गये अन्य कई लोग घायल हुये उनके शरीर से रक्त बहने लगा। पुलिस खड़ी देखती रही उसने न किसी को रोका न किसी को पकड़ा। बड़ी कठिनाई से उपद्रव शान्त हुआ।

३४. अमृतसर में ही एकदिन एक भङ्गेड़ी ब्राह्मण ने स्वामीजी के उपदेशों से चिढ़कर सोटा मारना चाहा। लोगों ने उसे पकड़ लिया। स्वामीजी ने उसे छुड़वा दिया।

३५. २९ सितम्बर १८७८ को मेरठ में आर्यसमाज की स्थापना स्वामीजी के कर कमलों द्वारा हुई। स्वामीजी के व्याख्यान शहर में लाला रामशरनदास के मकान पर हुआ करते थे। मेरठ छावनी का एक सेठ महाराज का इतना विरोधी हो गया था कि उसने उन्हें पीटने के लिये कुछ गूजरों को तैयार कर लिया, परन्तु वह कुछ नहीं कर पाया। पर महाराज के श्राद्ध खण्डन के व्याख्यान से ब्राह्मण व महाब्राह्मण बहुत चिढ़ गये उन्होंने भी कुछ गुण्डों को तैयार किया कि जब रात्रि में व्याख्यान की समाप्ति पर स्वामीजी अपने डेरे पर जाये, उन्हे लाठियों से पीटा जाये। यह पता लगने पर भी स्वामीजी उसी गली में होकर गये। दुष्ट लोग लाठियाँ लिये बैठे के बैठे ही रह गये और किसी का भी स्वामीजी पर आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ।

३६. अप्रैल १८७९ में स्वामीजी हरिद्वार में व्याख्यान दे रहे थे कि ज्वालापुर निवासी एक बूढ़े ब्राह्मण को बड़ा क्रोध आया और वह खड़ा होकर बोला कि स्वामी! जी में आता है तेरा गला काट लूँ और फिर अपना भी काट लूँ। तूने हमें बड़ी हानि पहुँचाई है। हमारी जीविका मार दी है। पहरेदार ने उसे वहाँ से हटा दिया।

३७. वैशाख वदि० १ सं० १९३६ को कुछ पण्डितों ने स्वामीजी को स्वस्थान पर हरिद्वार में शास्त्रार्थ के लिये निमन्त्रित किया और योजना यह बनाई कि यदि दयानन्द यहाँ आये तो उसका सिर फोड़ दो। स्वामीजी ने उत्तर दिया कि मैं शास्त्रार्थ के लिये हर समय तैयार हूँ, परन्तु इसका प्रबन्ध कोई राजपुरुष करे। जूनागढ़ अखाड़े में जाने पर मुझे शारीरिक हानि की आशङ्का है। उनके कई पत्र आये पर स्वामीजी इसी बात पर डटे रहे और गये नहीं।

३८. स्वामीजी के पास शिवराम नामका एक पण्डित रहता था, उसके श्वसुर और चाचा आदि को यह भय था कि कहीं शिवराम स्वामीजी की सङ्गत में रहकर संन्यासी न हो जाये। अत: उन्होंने शिवराम को पत्र लिखा कि तुम घर लौट आओ और यदि दयानन्द तुम्हें छुट्टी नहीं देगा तो हम उसका सिर काट लेंगे ? शिवराम ने वह पत्र स्वामीजी को दिखाया। स्वामीजी ने कहा तुम

हमारी चिन्ता छोड़ो पर तुम्हारी इच्छा हो तो चले जाओ। उस समय स्वामीजी के पास कोई अन्य पण्डित नहीं था।

३९. एकदिन महाराज श्राद्ध खण्डन कर रहे थे। कुछ दुष्टों ने उनपर ढेले फेंकें, परन्तु स्वामीजी तनिक भी विचलित नहीं हुये और व्याख्यान देते रहे।

४०. एकदिन एक मुसलमान युवक आया। उसने कुछ प्रश्न किये अण्ड-बण्ड बकता रहा। महाराज शान्त रहे वह दुष्ट बकता ही रहा और फिर चला गया।

४१. मैडम ब्लैवेट्स्की ने अपनी पुस्तक "From the cawes and iungls of hudustan" में लिखा है कि एकबार महाराज बङ्गाल में एक छोटे से ग्राम में शैवमत का खण्डन कर रहे थे। एक शैव ने काला नाग स्वामीजी के निवस्त्र पैरों पर फेंका और कहा कि अब वासुकी देवता स्वयं ही प्रकट कर देगा कि कौन सच्चा है। सर्प उनकी टाँग पर लिपट गया। स्वामीजी ने झटके से उसे फेंककर अपनी एड़ी से कुचल डाला और शैव से कहा कि तुम्हारा देवता तो शिथिल रहा, मैंने ही इस विवाद का निर्णय कर दिया।

४२. स्वामीजी ने एकबार मौलवी इमदाद हुसैन को बताया था कि एक दिन मैं (स्वामीजी) शौच करने बैठा था कि एक मनुष्य नंगी तलवार लिये मेरे पीछे आ खड़ा हुआ। मैंने उससे कहा कि मैं शौच से निवृत्त हो लूँ तब मेरा सिर काट डालना। इसपर वह राजी हो गया। जब मैं निवृत्त हो गया तब मैंने अपनी गर्दन उसके आगे झुका दी। इससे वह इतना प्रभावित हुआ कि बिना कुछ कहे ही मुझे छोड़कर चला गया।

४३. १९ अगस्त से ८ सितम्बर १८८१ तक स्वामीजी रायपुर में थे। वहाँ के ठाकुर हरिसिंह जब स्वामीजी से मिलने आये तो स्वामीजी ने पूछा कि आपका मन्त्री कौन है। ठाकुर के यह बताने पर कि शेखबख्श इलाही है। स्वामीजी ने कहा कि आर्यपुरुषों को उचित है कि यवनों को राजमन्त्री न बनाएँ ये तो दासीपुत्र हैं। इसे सुनकर शेख का भतीजा करीम बख्श और अन्य ५-७ मुसलमान क्रोधित हो गये और स्वामीजी को पीटने का षड्यन्त्र करने लगे। बाद में स्वामीजी द्वारा स्पष्टीकरण देने पर यह मामला शान्त हो गया।

४४. २९ सितम्बर १८८३ को स्वामीजी को जोधपुर में रात्रि के समय स्वामीजी के रसोइये धौड़ मिश्र ने स्वामीजी को दूध में विष मिलाकर दे दिया। यह विष स्वामीजी के लिये प्राणघातक सिद्ध हुआ।

उपरोक्त घटनाओं से यह सुतराँ स्पष्ट है कि महर्षि की जीवनी के प्रारम्भिक एवं प्रामाणिक लेखकों के आधार पर स्वामीजी पर घात प्रतिघात की ४४ घटनाएँ हुईं। २९ सिततम्बर १८८३ को स्वामीजी को जोधपुर में जो विष दिया गया वह प्राणघातक सिद्ध हुआ और अन्तत: महर्षि दयानन्द ३० अक्तूबर १८८३ मङ्गलवार को प्रभु की इच्छा व्यवस्था के अनुसार महाप्रयाण कर गये।